

thenbüscheln u. s. w. versehen DhŪRTAS. 66, 8. निमग्नकङ्कपद्माङ्कितैः क्रोडैः स्त्वकितेव (शटवी) KATHĀS. 42, 5. अभिनवकुसुमस्त्वकिततरु mit frischen Blütenbüscheln besetzt Vikr. 119. नारीदङ्गीरस्त्वकितो नरनाथमार्गः RĀGA-TAR. 5, 480. स्फुरन्नानारत्नस्त्वकिततरु KHANDOM. 104. Ueberall स्त्वकित geschrieben.

स्तब्ध s. u. स्तम्.

स्तब्धकर्पा m. Steifohr, N. pr. einer Gazelle HARIV. 1210. eines Löwen Hir. 60, 6. fgg.

स्तब्धता (von स्तब्ध) f. 1) Steifheit: des Gliedes KĀRAKA 7, 2. — 2) Aufgeblasenheit, ein anspruchvolles Wesen (= शौद्रत्य NILAN.) MBH. 5, 1536. KĀM. NĪTIS. 13, 62. स्प्र 4, 89. — 1) 2) Spr. (II) 2166.

स्तब्धत्व (wie eben) n. = स्तम्भ HALĀS. 5, 48. 1) Steifheit: des Nabels ÇĀRṆO. SĀM. 3, 4, 24. — 2) Aufgeblasenheit, ein anspruchvolles Wesen: स्प्र Spr. (II) 3870. — 1) 2) KATHĀS. 92, 11.

स्तब्धपादता f. Lähmung der Beine Suça. 1, 348, 15.

स्तब्धमेढ adj. dessen Glied steif ist Suça. 1, 118, 17. davon nom. abstr. स्ता f. 291, 2. 366, 6.

स्तब्धरोमन् m. Schwein (steifhaarig, steifborstig) AK. 2, 5, 2. H. 1288.

स्तब्धसक्थिता f. Lähmung der Schenkel Suça. 1, 348, 18.

स्तब्धसेभार (!) m. ein Rākshasa H. ç. 37.

स्तब्धीकर (स्तब्ध + 1. कर) steif machen: पादान्स्तब्धीकृत्य Hir. 23, 8.

स्तब्धीभाव (von स्तब्धीभू) m. Unbeweglichkeit BĀLAB. 30. Lähmung, Hemmung Vedānta. (Allah.) No. 138.

स्तब्धीभू (स्तब्ध + 1. भू) gelähmt —, gehemmt werden; s. स्तब्धीभाव.

स्तम्, स्तम्भ (= स्क्भ), स्तम्भते (प्रतिबन्धे) Dhātup. 10, 26. स्तम्भाति (रोधने, स्तम्भे) 31, 7. स्तम्भान् imper. स्तम्भाति P. 3, 1, 82. Vop. 16, 1. त-स्तम्भ, तस्तम्भत् RV. 1, 121, 3. तस्तम्भे, तस्तम्भिरे, तस्तम्भान्; अस्तम्भत् und अस्तम्भीत् P. 3, 1, 58. Vop. 8, 38. (उद्) अस्तम्भसीत्; स्तब्धौ. 1) feststellen, stützen (namentlich den Himmel) RV. 1, 67, 5. 121, 2. 3. 2. 12, 2. अचव्रतः 17, 5. 8, 42, 1. 78, 5. मृक्षा दिवं न तस्तम्भुः VĀLAKH. 7, 2. RV. 10, 89, 4. 121, 6. AV. 9, 5, 15. ÇAT. Br. 6, 5, 2, 15. (ताम्) अव्यथयती स्तम्भीताम् TS. 4, 4, 3, 3. आदित्यम् PAÑĀV. Br. 25, 10, 11 in Ind. St. 3, 42. — 2) stützen so v. s. anstossen an, reichen bis (acc.): सो ऽवर्धत दिवं स्तब्धा MBH. 5, 278. अयस्याम दिवं स्तब्धा गच्छन्तं तं मक्यायुतिम् 7, 882. दिवं स्तम्भन् (मक्यायुतः) HARIV. 13433. स तु शब्दे दिवं स्तब्धा प्रतिशब्दमग्रीवन्तम् MBH. 3, 12091. 14, 1899. दिवं स्तब्धेव (so mit der ed. Bomb. zu lesen) निःस्वनः 7, 1358. — 3) anhalten, hemmen, festbannen RV. 2, 11, 5. सिन्धुम् 3, 53, 9. Geschosse HARIV. 7501 (तस्तम्भे). BHATṬ. 17, 45. सामर्थ्यं चापि सो ऽस्तम्भीद्विक्रमं चास्य नास्तम्भन् 18, 81. कृतेन येन मन्त्रेण स्तम्भते वाञ्छिताधिकम् (वाञ्छिता^० gedr.) Verz. d. Oxf. H. 99, 6, 37. — 4) med. unbeweglich —, steif werden: गात्रं तस्तम्भे BHATṬ. 14, 55. पृथिवी पर्वता मेघा मूर्तिमत्स्य ये ऽपरे । सर्वं तद्धारुणं ज्ञेयमापस्त-स्तम्भिरे यतः || erstarren, zu einem festen Körper werden MBH. 12, 6807. आपस्तस्तम्भिरे (so ed. Bomb.) चास्य समुद्रमभियास्यतः 1085 = 2244 = HARIV. 322 = VP. 1, 13, 49. — partic. 1) स्तम्भितं ved. P. 7, 2, 34. festgestellt, gestützt RV. 10, 121, 5. AV. 13, 1, 7. — 2) स्तब्ध a) anstossend an, reichend bis (loc.): वृत् इव स्तब्धो दिवि ÇVETIC. Up. 3, 9. शृङ्गं (पारियात्रस्य) दिवि स्तब्धम् R. 4, 43, 27. — b) steif, starr, gelähmt,

VII. Theil.

unbeweglich Suça. 1, 113, 3. लोचन 7, 253, 12. ऋनु 254, 10. योनि 2, 397, 20. संधि 183, 12. 149, 14. शेफम् KĀRAKA 7, 1. अङ्ग DAÇAK. 73, 5. लोचन MBH. 3, 2214. BHĀG. P. 10, 36, 3. नयन MBH. 13, 2809. ऽदृष्टि PAÑĀT. ed. ord. 57, 21. स्तब्धात HARIV. 3716. कर्णशिरोधर MBH. 7, 731. श्रोत्र RĀGA-TAR. 4, 451. स्तब्धोर्ध्वकर्पा BHĀG. P. 7, 8, 21. बाहु KATHĀS. 20, 96. Berg PAÑĀT. 190, 17. स्तब्धा भयात् BHATṬ. 13, 32. R. ed. Bomb. 6, 46, 4. KATHĀS. 123, 37. समुद्रः स्तब्धतोपः dessen Wasser zu einem festen Körper geworden ist HARIV. 9757. स्तब्धोदः 9765. स्तब्धम् adv. unbeweglich: श्नाम् MĀNĀS. 34, 2. अस्तब्धं beweglich, rührig: Vogel R. 3, 79, 22. — c) aufgeblasen, anspruchvoll KĀND. Up. 8, 1, 2. BHĀG. 16, 17, 18, 28. MBH. 13, 5891 (धनैश्चर्याधिकाः mit der ed. Bomb. zu lesen). HARIV. 5921. Spr. (II) 639. 790. fg. 5860, v. l. 7187. 7881. VARĀH. BṚH. 20, 1. 21, 10 (saumselig Comm.). पत्प्रणमति (loc.) स्तब्धासि Gīt. 9, 10. MĀRK. P. 14, 77. BHĀG. P. 3, 32, 39. 4, 2, 10 (= उचितक्रियाभूय Comm.). 3, 17. 14, 4. 17, 27. 29, 49. 5, 10, 14. 6, 17, 14. 7, 8, 6. 8, 20, 15. 22, 24. 11, 5, 6. मति adj. 8, 4, 10. 22, 11. — b) c) Spr. (II) 161. 1446.

— caus. 1) स्तम्भायति a) feststellen, stützen: द्वौ रजः RV. 1, 62, 5. 164, 25. अचव्रे 2, 15, 2. 16, 3, 2. — b) anhalten, hemmen, festbannen: पणाम् RV. 6, 44, 2. — 2) स्तम्भयति, अस्तम्भत् P. 8, 3, 116. Schol. Vop. 18, 1. partic. स्तम्भित. a) befestigen: स्तम्भितस्येव हरेण त्रिपुरस्य विहायसि HARIV. 3938. stützen, vor einem Fall bewahren, aufrichten, befestigen (in übertr. Bed.): सोदत्तं सारथिं रणे MBH. 3, 827. BHĀG. P. 9, 7, 5. सेनाम् R. 5, 1, 14. आत्मनात्मानम् BHĀG. P. 6, 1, 62. अतिनिष्कम्प-स्तम्भितातःकरणे UTTARAR. 58, 6 (76, 1). — b) steif —, unbeweglich machen, lähmen: die Zunge Suça. 1, 155, 8. 254, 5. 305, 20. दम्भस्तम्भितकंधर KATHĀS. 24, 110. स्तम्भिता देवताः सर्वाश्चित्रपुत्तलिका इव PAÑĀR. 1, 12, 12. erstarren machen, in einen festen Körper verwandeln: Wasser MBH. 1, 207. 3, 2395. 9, 1621 (med.). HARIV. 9733. R. 5, 94, 8. 17 (med.). MĀRK. 61. RĀGA-TAR. 3, 71. — c) anhalten, hemmen, festbannen (durch Zauber): तस्य प्रकृतो बाहुम् MBH. 3, 10387. BHĀG. P. 9, 3, 25. स रथः स्तम्भितस्तस्यैव MBH. 7, 3878. तदस्त्रमस्त्रेण रणे स्तम्भयामास तस्य 7267. (मणिः) शत्रोः स्तम्भयते शस्त्रमुत्तमम् KATHĀS. 71, 135. BHATṬ. 15, 87. ein Heer MBH. 8, 2767. UTTARAR. 109, 14 (148, 10). MĀLATIM. 140, 4. RĀGA-TAR. 4, 248. आपततम् MBH. 13, 7316. न चेत्तुः स्तम्भितेयमाः HARIV. 3913. 8076. 12266. 12555. fg. 13283. R. 1, 75, 17 (77, 20 GORR.). R. GORR. 2, 59, 10. UTTARAR. 117, 8 (159, 3). VARĀH. BṚH. S. 12, Anf. 6. KATHĀS. 44, 58. PAÑĀR. 1, 14, 6. ÇATR. 14, 248. अग्निम्, वायुम्, आदित्यम् u. s. w. NṢ. TĀP. Up. in Ipd. St. 9, 118. Verz. d. Oxf. H. 90, a, 21. 24. 100, a, 28. PAÑĀR. 1, 12, 13. प्रभावस्तम्भितच्छाय (वनस्याति) RAÇH. 12, 21. दिव्यक्रियाम् so v. a. ein Gottesurtheil durch Zauber glücklich bestehen RĀGA-TAR. 4, 94. hemmen so v. a. unterdrücken: Thränen, das Weinen RAÇH. 12, 12. ÇĀK. 81. das Lachen KATHĀS. 15, 52. अस्तम्भितव n. das Nichtgehemmtsein, das Bestehen in ungehinderter Weise; s. सर्वलोकभ्यास्तम्भितवविधसनकर.

— अनु, partic. अनुष्ठब्ध aufgerichtet in einer Etymologie ÇĀRṆ. Br. 24, 4.

— अय s. अयस्तम्भ.

— अभि, अभिष्टम्भाति, ऽष्टम्भाति, अयष्टम्भात्, अभितष्टम्भ Schol. zu P.